आ'ला ह़ज़रत मुजद्दीदे दीनो मिल्लत शाह इमाम अह़मद रज़ा रवान ----------
की सिरते मुबारका के चन्द रौशन अवराक

आ'ला ह़ज़रत की इन्फ़िरादी कोशिश

AALA HAZRAT KI INFARADI KOSHISH (HINDI)

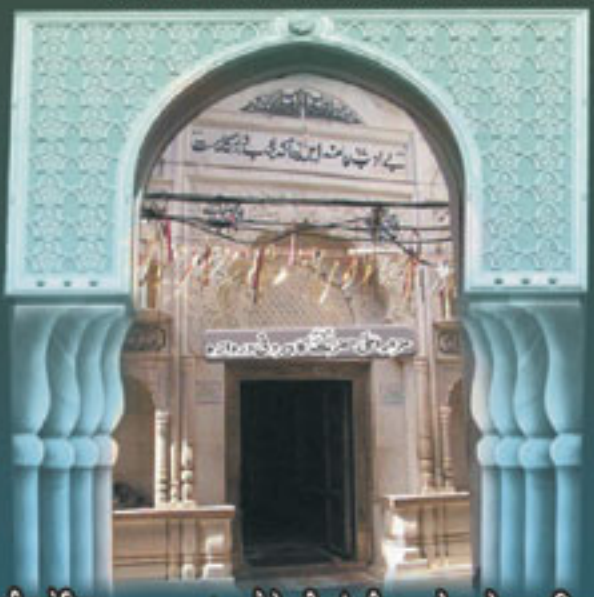

- कमसिन मुबल्लिग की इन्फ़िरादी कोशिश
- सोने की अंगूठी पहनने वाले पर इन्फ़िरादी कोशिश
- नमाज़ में गलती करने वाले पर इन्फ़िरादी कोशिश
- ग़ैर मुस्लिम पर इन्फ़िरादी कोशिश
- तबीब पर इन्फ़िरादी कोशिश
- म-दनी क़ाफ़िले की बरकत से आ'ला ह़ज़रत का दीदार हो गया
- जज़्बाती मुरीद पर इन्फ़िरादी कोशिश

मक-त-बतुल मदीना®
(दा'वते इस्लामी)

मिलेकटेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा
अहमदआबाद-1. गुजरात, इन्डिया Ph:91-79-25391168
E-mail:maktabahind@gmail.com, www.dawateislami.net

SC1286

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ط وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِالْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़: शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَاذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(अल मुस्तत़रफ़, जिल्द:1, स.40, दारुल फ़िक्र बैरूत)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम सि. 1428 हि.

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ط وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِالْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, बि इज़्ने परवर्द गार दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फरमाने ख़ुश्बूदार है : ''बेशक तुम्हारे नाम मअ़ शनाख़्त मुझ पर पेश किये जाते हैं लिहाज़ा मुझ पर अह़सन (या'नी ख़ूब सूरत अल्फ़ाज़ में) दुरूदे पाक पढ़ो ।'' (मुसन्नफ़ अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़, जि. 2, स. 140, ह़दीस : 3116, दारुल कुतुबुल इ़ल्मिय्या बैरूत)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(1) कमसिन मुबल्लिग़ की इन्फ़िरादी कोशिश

एक उस्ताज़ साहिब मद्रसे में ह़स्बे मा'मूल बच्चों को सबक़ पढ़ा रहे थे जिन में इ़ल्मी घराने से तअ़ल्लुक़ रखने वाला एक **म-दनी मुन्ना** भी शामिल था । उस की हर अदा में **वक़ार** और सलीक़ा था । नूरानी चेहरा उस की क़ल्बी नूरानियत की अ़क्कासी कर रहा था । सुरमगीं चमकती हुई आंखें उस की **ज़हानत व फ़तानत** की ख़बर दे रही थीं । वोह बड़ी तवज्जोह से अपना सबक़ पढ़ रहा था । इतने में एक बच्चे ने आ कर सलाम किया । उस्ताज़ साहिब के मुंह से निकल गया : ''जीते रहो ।'' येह सुन कर म-दनी मुन्ना चौंका और कुछ यूं अ़र्ज़ की : ''या उस्ताज़ी ! सलाम के जवाब में तो وَعَلَيْكُمُ السَّلَام कहना चाहिये !''

www.dawateislami.net

उस्ताज़ साहिब **कमसिन मुबल्लिग़** की ज़बान से इस्लाह़ी जुम्ला सुन कर नाराज़ न हुए बल्कि **ख़ैर ख़्वाही** करने पर **ख़ुशी** का इज़्हार फरमाया और अपने इस होनहार शागिर्द को ढेरों **दुआएं** दी।

(मुलख़्ख़सन ह़याते आ'ला ह़ज़रत, जि. 1, स. 63)

कमसिन मुबल्लिग़ कौन था ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप जानते हैं वोह **कमसिन मुबल्लिग़** कौन था ? वोह चौदहवीं सदी हिजरी के मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम **अहमद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن थे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की **विलादते** बा सआ़दत बरेली शरीफ़ (हिन्द) के मह़ल्ला जसौली में 10 शव्वालुल मुकर्रम सि. 1272 हि. बरोज़ ह़फ़्ता ब वक़्ते ज़ोहर मुत़ाबिक़ 14 जून 1856 ई. को हुई। **आ'ला ह़ज़रत** علیہ رحمۃ ربّ العزت ने सिर्फ़ तेरह साल दस माह चार दिन की उ़म्र में तमाम मुरव्वजा उ़लूम की तक्मील अपने वालिदे माजिद रईसुल मु-तकल्लिमीन ह़ज़रत मौलाना **नक़ी अ़ली ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنّان से कर के सनदे फ़राग़त ह़ासिल कर ली। उसी दिन आप ने एक सुवाल के जवाब में **पहला फ़तवा** तह़रीर फरमाया था। फ़तवा सह़ीह़ पा कर आप के वालिदे माजिद ने मस्नदे इफ़्ता आप के सिपुर्द कर दी और आख़िर वक़्त तक फ़तावा तह़रीर फरमाते रहे। यूं तो

www.dawateislami.net

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने सि. 1286 हि. से सि. 1340 हि. तक **लाखों फ़तवे** लिखे, लेकिन अफ़्सोस ! सब को नक़्ल न किया जा सका । जो नक़्ल कर लिये गए थे उन का नाम ''**अल अ़तायन्न-बविय्यह फ़िल फ़तावर्र-ज़विय्यह**'' रखा गया । हर फ़तवे में दलाइल का समुन्दर मोजज़न है । **फ़तावा र-ज़विय्या** (ग़ैर मुख़र्रजा) की 12 और तख़्रीज शुदा की 30 जिल्दें हैं । येह ग़ालिबन उर्दू ज़बान में दुन्या का ज़ख़ीम तरीन मज्मूअ़ए फ़तावा है जो कि तक़रीबन बाईस हज़ार (22000) स-फ़ह़ात, छ हज़ार आठ सो सेंतालीस (6847) सुवालात के जवाबात और दो सो छ (206) रसाइल पर मुश्तमिल है । जब कि हज़ारहा मसाइल ज़िम्नन ज़ेरे बह़स आए हैं । आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ 55 से ज़ाइद **उ़लूम** पर उ़बूर रखने वाले ऐसे **माहिर आ़लिम** थे कि दरजनों उ़लूमे अ़क़्लिया व नक़्लिया पर आप की **सेंकड़ों तसानीफ़** मौजूद हैं, हर तस्नीफ़ में आप की **इल्मी वजाहत, फ़िक़्ही महारत** और **तह़क़ीक़ी बसीरत** के जल्वे दिखाई देते हैं, बिल ख़ुसूस **फ़तावा र-ज़विय्या** तो ग़व्वासे बह़रे फ़िक़्ह के लिये ऑक्सीजन का काम देता है । **आप** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने क़ुरआने मजीद का तरजमा किया जो उर्दू के मौजूदा तराजिम में सब पर फ़ाइक़ है । आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के तरजमा का नाम ''**कन्ज़ुल ईमान**'' है । जिस पर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के ख़लीफ़ा सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना सय्यिद **नईमुद्दीन मुराद आबादी** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ह़ाशिया **ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** लिखा है । **25 स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र** सि. 1340

www.dawateislami.net

हि. ब मुत़ाबिक़ सि. 1921 ई. को जुमुअ़तुल मुबारक के दिन हिन्दुस्तान के वक़्त के मुत़ाबिक़ 2 बज कर 38 मिनट पर, ऐन अज़ान के वक़्त इधर मुअज़्ज़िन ने حَیَّ عَلَی الفَلاح कहा और उधर इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** اِنَّالِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْن عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن ने दाइ़ये अजल को लब्बैक कहा। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का **मज़ारे पुर अन्वार बरेली शरीफ़** (हिन्द) में आज भी ज़ियारत गाहे ख़ास व आ़म बना हुवा है।

आ'ला ह़ज़रत علیہ رحمۃ ربّ العزت ह़ाफ़िज़े क़ुरआन, फ़क़ीह, मुफ़्ती, मुह़द्दिस, मुदर्रिस होने के साथ साथ दीने इस्लाम के **अ़ज़ीम मुबल्लिग़** भी थे। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी तह़रीर व तक़रीर में जा ब जा **नेकी की दा'वत** पेश की है। ऐसी ही 20 ह़िकायात **''आ'ला ह़ज़रत की इन्फ़िरादी कोशिशें''** के नाम से **दा'वते इस्लामी** के इ़ल्मी शो'बे की मजलिस **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** की त़रफ़ से पेश की जा रही हैं। याद रखिये कि एक को अलग से नेकी की दा'वत देने (या'नी उसे समझाने) को **''इन्फ़िरादी कोशिश''** कहते हैं जब कि सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में बयान के ज़रीए, मस्जिद दर्स, चोक दर्स, वग़ैरा के ज़रीए मुसल्मानों तक नेकी की दा'वत पहुंचाने (या'नी उन्हें समझाने) को **''इज्तिमाई कोशिश''** कहते हैं। यक़ीनन नेकी की दा'वत के काम में **इन्फ़िरादी कोशिश** को बड़ा अ़मल दख़्ल है ह़त्ता कि हमारे मीठे मीठे

www.dawateislami.net

आक़ा, मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नीज़ सब के सब अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने **नेकी की दा'वत** के काम में **इन्फ़िरादी कोशिश** फ़रमाई है। हमें भी चाहिये कि **इन्फ़िरादी कोशिश** के ज़रीए ख़ूब ख़ूब नेकी की दा'वत देते जाएं और सवाब का ख़ज़ाना लूटते जाएं। इन्फ़िरादी कोशिश के बारे में तफ़्सीली मा'लूमात हासिल करने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा **मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के बयान के तह़रीरी गुलदस्ते **''जन्नती महल का सौदा''** और मक-त-बतुल मदीना की शाएअ़ कर्दा किताब **''इन्फ़िरादी कोशिश''** का ज़रूर मुत़ा-लआ़ कीजिये और अ़-मली त़रीक़ा सीखने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सफ़र इख़्तियार कीजिये। **अल्लाह** तआ़ला हमें **''अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश''** करने के लिये म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल करने और म-दनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बनते रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और **दा'वते इस्लामी** की तमाम मजालिस ब शुमूल मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** को दिन पच्चीसवीं रात छब्बीसवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

शो'बए इस्लाह़ी कुतुब, मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

(दा'वते इस्लामी)

16 रबीउ़न्नूर सि. 1430 हि., 14 मार्च सि. 2009 ई.

www.dawateislami.net

(2) नमाज़ में ग़-लती करने वाले पर इन्फ़िरादी कोशिश

आ'ला ह़ज़रत عليه رحمة رب العزت नमाज़ के बा'द देहली (हिन्द) की एक **मस्जिद** में मश्ग़ूले वज़ीफ़ा थे। एक साहि़ब आए और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के क़रीब ही **नमाज़** पढ़ने लगे। जब तक **क़ियाम** में रहे मस्जिद की दीवार को **देखते** रहे, **रुकूअ़** में भी सर ऊपर उठा कर सामने दीवार ही की त़रफ़ नज़र रखी। जब वोह नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो उस वक़्त तक **आ'ला ह़ज़रत** عليه رحمة رب العزت भी अपना वज़ीफ़ा मुकम्मल कर चुके थे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उन्हें अपने पास बुला कर **शर-ई मस्अला** समझाया कि ''नमाज़ में किस किस ह़ालत में कहां कहां **निगाह** होनी चाहिये।'' फिर फ़रमाया : ''**ब ह़ालते रुकूअ़ निगाह पाउं पर होनी चाहिये।**'' येह सुनते ही वोह साहि़ब क़ाबू से बाहर हो गए और कहने लगे : ''वाह साहि़ब! बड़े मौलाना बनते हो, नमाज़ में क़िब्ला की त़रफ़ मुंह होना ज़रूरी है और तुम **मेरा मुंह क़िब्ला से फैरना चाहते हो !**'' येह सुन कर आ'ला ह़ज़रत عليه رحمة رب العزت ने उन की समझ के मुत़ाबिक़ कलाम करते हुए फ़रमाया : ''**फिर तो सज्दा में भी पेशानी के बजाए ठोड़ी ज़मीन पर लगाइये !**'' येह हिक्मत भरा जुम्ला सुन कर वोह बिल्कुल ख़ामोश हो गए और उन की समझ में येह बात आ गई कि ''**क़िब्ला रू होने का मत़्लब येह नहीं कि अव्वल ता आख़िर क़िब्ला की त़रफ़ मुंह कर के दीवार को देखा जाए,** बल्कि सह़ीह़ मस्अला वोही है जो आ'ला ह़ज़रत عليه رحمة رب العزت ने बयान फ़रमाया।''

(हयाते आ'ला ह़ज़रत जि. 1, स. 303)

www.dawateislami.net

म-दनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मक़ूला है : ''كَلِّمُوا النَّاسَ عَلٰى قَدْرِ عُقُوْلِهِمْ (या'नी लोगों से उन की अ़क़्लों के मुत़ाबिक़ कलाम करो)'' (अब्जदुल उ़लूम, जि. 1, स. 129) आप ने देखा कि **आ'ला ह़ज़रत** علیہ رحمۃ ربّ العزت ने एक आ़म शख़्स से उस की **अ़क़्ल** के मुत़ाबिक़ कलाम किया तो आप की ज़बान से निकले हुए ह़िक्मत भरे **एक जुम्ले** ने बरसा बरस से नमाज़ में ग़-लत़ी करने वाले की लम्ह़ा भर में **इस्लाह़** फ़रमा दी। **''अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश''** करने वाले मुबल्लिग़ीन को चाहिये कि इस **म-दनी फूल** को अपने दिल के म-दनी गुलदस्ते में सजा कर इस्लामी भाइयों को **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों, हफ़्तावार इज्तिमाआ़त** वग़ैरा में शिरकत करवाने के लिये **इन्फ़िरादी कोशिश** करें, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ काम्याबी उन के क़दम चूमेगी।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की आ'ला ह़ज़रत पर रह़मत हो और उन के स-दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(3) त़बीब पर इन्फ़िरादी कोशिश

सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती **मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी** علیہ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने उ़लूमे दीनिया की तक्मील के बा'द कुछ अ़र्सा **तदरीस** फ़रमाई। फिर बा'ज़ वुजूहात की बिना पर तदरीस छोड़ कर **मत़ब** (या'नी क्लीनिक) शुरूअ़ कर दिया

www.dawateislami.net

(क्यूं कि आप ह़कीम भी थे)। **ज़रीअ़ए** मआ़श से मुत्मइन हो कर जुमादल ऊला सि. 1329 हि. में आप رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ किसी काम से ''लखनऊ'' तशरीफ़ ले गए। वहां से अपने **उस्ताज़े मोह़तरम** ह़ज़रत मौलाना शाह वसी अह़मद मुह़द्दिस सूरती علیہ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی की ख़िदमत में ''पीली भीत'' ह़ाज़िर हुए। ह़ज़रत मुह़द्दिस सूरती علیہ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی को जब मा'लूम हुवा कि उन का होनहार शागिर्द **तदरीस** छोड़ कर **मत़ब** में मश्ग़ूल हो गया है तो उन्हें बेह़द **अफ़्सोस** हुवा। चूंकि सदरुश्शरीअ़ह علیہ رحمۃ ربّ الوَرٰی का इरादा **बरेली** शरीफ़ ह़ाज़िर होने का भी था चुनान्चे बरेली शरीफ़ जाते वक़्त मुह़द्दिस सूरती علیہ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने **एक ख़त़** इस मज़्मून का **आ'ला ह़ज़रत** علیہ رحمۃ ربّ العزت की ख़िदमत में तह़रीर फ़रमा दिया था कि ''जिस त़रह़ मुम्किन हो आप इन (या'नी सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी علیہ رحمۃ اللّٰہ الغنی) को ख़िदमते दीन व इ़ल्मे दीन की त़रफ़ **मु-तवज्जेह** कीजिये।''

जब आ'ला ह़ज़रत علیہ رحمۃ ربّ العزت के दरे दौलत पर **ह़ाज़िरी** हुई तो आप رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ निहायत **लुत्फ़ो** करम से पेश आए और दरयाफ़्त फ़रमाया : मौलाना क्या करते हैं ? मैं ने अ़र्ज़ की : मत़ब करता हूं। आ'ला ह़ज़रत علیہ رحمۃ ربّ العزت ने फ़रमाया : ''मत़ब भी अच्छा काम है, اَلْعِلْمُ عِلْمَانِ عِلْمُ الْاَدْیَانِ وَعِلْمُ الْاَبْدَانِ (या'नी इ़ल्म दो हैं : इ़ल्मे दीन और इ़ल्मे त़िब), मगर मत़ब करने में येह ख़राबी है कि सुब्ह़ सुब्ह़ क़ारूरा (या'नी पेशाब) देखना पड़ता है।'' वलिय्ये कामिल के लबहाए मुबा-रका से निकला हुवा येह जुम्ला अपने अन्दर ऐसी रूह़ानियत लिये हुए

www.dawateislami.net

था कि सदरुश्शरीअ़ह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के दिल से ति़बाबत (या'नी इलाज व मुआ़लजे के पेशे) का **ख़याल** जाता रहा। फिर मत़ब छोड़ा और **आ'ला ह़ज़रत** علیہ رحمۃ ربّ العزت जैसे अ़ज़ीम रूह़ानी त़बीब की ज़ेरे निगरानी बरेली शरीफ़ ही में रह कर दीनी कामों में मस्रूफ़ हो गए और **इल्मे दीन की इशाअ़त** के ज़रीए़ लोगों का रूह़ानी इलाज करने लगे।

लिये बैठा था इश्क़े मुस्त़फ़ा की आग सीने में
विलायत का जबीं पर नक़्श, दिल में नूर वह़दत का

(तज़्किरए सदरुश्शरीअ़ह, स. 12, मुलख़्ख़सन)

म-दनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ'ला ह़ज़रत علیہ رحمۃ ربّ العزت की इन्फ़िरादी कोशिश के नतीजे में दोबारा इ़ल्मे दीन के शो'बे से वाबस्ता होने वाले सदरुश्शरीअ़ह علیہ رحمۃ ربّ الورٰی वोही हस्ती हैं जिन्हों ने मुसल्मानाने पाक व हिन्द को उर्दू ज़बान में "**बहारे शरीअ़त**" जैसा इल्मी ख़ज़ाना अ़ता किया। "**बहारे शरीअ़त**" फ़िक़्हे ह़-नफ़ी का बेहतरीन इन्साई-क्लोपीडिया (या'नी मा'लूमाती मज्मूआ़) है। शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه इस किताब की अहम्मिय्यत के पेशे नज़र अपने तमाम मुरीदीन व मु-तअ़ल्लिक़ीन को बहारे शरीअ़त पढ़ने की तरग़ीब दिलाते हुए "**म-दनी इन्आ़मात**" के 70वें और 72वें म-दनी इन्आ़म में इर्शाद फ़रमाते हैं : "क्या आप ने इस

www.dawateislami.net

साल कम अज़ कम एक मर्तबा **बहारे शरीअ़त** ह़िस्सा 9 से मुरतद का बयान, ह़िस्सा 2 से नजासतों का बयान और कपड़े पाक करने का त़रीक़ा, ह़िस्सा 16 से ख़रीद व फ़रोख़्त का बयान, वालिदैन के ह़ुक़ूक़ का बयान (अगर शादी शुदा हैं तो) ह़िस्सा 7 से मुह़र्रमात का बयान और ह़ुक़ूक़ुज़्ज़ौजैन, ह़िस्सा 8 से बच्चों की परवरिश का बयान, त़लाक़ का बयान, ज़िहार का बयान और त़लाक़े किनाया का बयान पढ़ या सुन लिया है ? क्या आप ने **बहारे शरीअ़त या नमाज़ के अह़काम** (रसाइले अ़त्तारिय्या ह़िस्सा अव्वल) से पढ़ या सुन कर अपने वुज़ू, ग़ुस्ल और नमाज़ दुरुस्त कर के किसी सुन्नी आ़लिम या ज़िम्मादार मुबल्लिग़ को सुना दिये हैं ?''

اَلْحَمْدُلِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के इल्मी व तह़क़ीक़ी शो'बे की मजलिस अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या ने **बहारे शरीअ़त** की तख़्रीज व तस्हील व ह़वाशी का काम शुरूअ़ कर रखा है। ता दमे तह़रीर इस की जिल्द अव्वल (ह़िस्सा 1 ता 6), ह़िस्सा 7,8,9,16 मक-त-बतुल मदीना से छप कर मन्ज़रे आ़म पर आ चुके हैं। **मक-त-बतुल मदीना** की किसी भी शाख़ से हदिय्यतन त़लब फ़रमाएं। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें भी औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा, इ़ल्मे नाफ़ेअ़ और अ़-मले सालेह़ की दौलत से मालामाल फ़रमा, ता दमे आख़िर **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़ता फ़रमा। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की आ'ला ह़ज़रत पर रह़मत हो और उन के स-दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

(4) सोने की अंगूठी पहनने वाले पर इन्फ़िरादी कोशिश

सज्जादा नशीं सरकारे कलां मारहरा शरीफ़ **हज़रत महदी हसन मियां** رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "मैं जब बरेली शरीफ़ आता तो **आ'ला हज़रत** علیہ رحمۃ ربِّ العزت खुद खाना लाते और हाथ धुलाते। एक मर्तबा मैं ने **सोने की अंगूठी** और छल्ले पहने हुए थे, ह़स्बे दस्तूर जब हाथ धुलवाने लगे तो फ़रमाया : "शहज़ादा हुज़ूर ! येह अंगूठी और छल्ले मुझे दे दीजिये !" मैं ने उतार कर दे दिये और बम्बई चला गया। बम्बई से मारहरा शरीफ़ वापस आया तो मेरी लड़की फ़ातिमा ने कहा : "अब्बा हुज़ूर ! बरेली शरीफ़ के मौलाना साहिब (या'नी आ'ला ह़ज़रत قدس سرہ) के यहां से पार्सल आया था, जिस में छल्ले अंगूठी और एक ख़त़ था जिस में येह लिखा था : "शहज़ादी साहिबा येह दोनों त़लाई अश्या आप की हैं (क्यूं कि मर्दों को इन का पहनना जाइज़ नहीं)।"

(ह़याते आ'ला ह़ज़रत, जि. 1, स. 105)

म-दनी फूल

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! कैसा प्यारा अन्दाज़े तब्लीग़ था मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, सरकारे **आ'ला हज़रत** علیہ رحمۃ ربِّ العزت का। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें भी इस्लाम की सर बुलन्दी की ख़ातिर ह़िक्मत व दानाई के साथ बड़े ही अह़सन अन्दाज़ में ख़ूब ख़ूब **नेकी की दा'वत** आम करने की तौफ़ीक़ अत़ा फ़रमाए। اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم

शहा ऐसा जज़्बा पाऊं कि मैं ख़ूब सीख जाऊं
तेरी सुन्नतें सिखाना म-दनी मदीने वाले صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की आ'ला ह़ज़रत पर रह़मत हो और उन के स-दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो** اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(5) त़ालिबे इल्म पर इन्फ़िरादी कोशिश

ह़ज़रते मौलाना नूर मुह़म्मद **علیہ رحمۃ اللّٰہِ الصَّمَد** और ह़ज़रत मौलाना सय्यिद क़नाअ़त अ़ली علیہ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوی येह दोनों ह़ज़रात मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, **आ'ला ह़ज़रत** علیہ رحمۃ ربّ العزت जैसे सच्चे आ़शिक़े रसूल की सोह़बते बा ब-र-कत में रह कर **इल्मे दीन** की दौलते बे बहा ह़ासिल कर रहे थे । एक मर्तबा मौलाना नूर मुह़म्मद رَحمَۃُ اللّٰہِ عَلَیہ ने सय्यिद साह़िब का नाम ले कर इस त़रह़ पुकारा : ''क़नाअ़त अ़ली, क़नाअ़त अ़ली !'' जब **सय्यिदुस्सादात** عَلَیہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के आ़शिक़े सादिक़ के कानों में येह आवाज़ पड़ी तो गवारा न किया कि ख़ानदाने रसूल के **शहज़ादे** को इस त़रह़ नाम ले कर पुकारा जाए। फ़ौरन मौलाना नूर मुह़म्मद साह़िब को बुलवाया और इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए फ़रमाया : **''क्या सय्यिद ज़ादों को इस त़रह़ पुकारते हैं ! कभी मुझे भी इस त़रह़ पुकारते हुए सुना ?** (या'नी मैं तो उस्ताज़ हूं फिर भी कभी ऐसा अन्दाज़ इख़्तियार नहीं किया)'' येह सुन कर मौलाना नूर मुह़म्मद साह़िब बहुत शरमिन्दा हुए और नदामत से निगाहें झुका लीं। **आ'ला ह़ज़रत** علیہ رحمۃ ربّ العزت ने फ़रमाया : ''जाइये ! **आइन्दा ख़याल रखियेगा ।**''

(ह़याते आ'ला ह़ज़रत, जि. 1, स. 183)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की आ'ला ह़ज़रत पर रह़मत हो और उन के स-दक़े**

www.dawateislami.net

हमारी मग़्फ़िरत हो اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(6) ग़ैर मुस्लिम पर इन्फ़िरादी कोशिश

ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद अय्यूब अ़ली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْقَوِی का बयान है कि "अज़ाने ज़ोहर हो चुकी थी मुफ़स्सिरे शहीर ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना **नईमुद्दीन मुराद आबादी** علیہ رحمۃ اللہ الہادی और ह़ज़रत मौलाना **रह़ूम इलाही** علیہ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی सरकारे आ'ला ह़ज़रत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن की ख़िदमते बा ब-र-कत में ह़ाज़िर थे। नमाज़ की तय्यारी हो रही थी। इतने में एक आरिया (या'नी ग़ैर मुस्लिम) आया और कहने लगा : **"अगर मेरे चन्द सुवालात के जवाबात दे दिये जाएं तो मैं और मेरी बीवी बच्चे सब मुसल्मान हो जाएंगे।"** ना मा'लूम उस के जवाबात में कितना वक़्त लगता ? चुनान्चे **आ'ला ह़ज़रत** علیہ رحمۃ ربّ العزت ने फ़रमाया : "कुछ देर ठहर जाओ ! अभी नमाज़ का वक़्त हो गया है, नमाज़ के बा'द اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **तुम्हारे हर सुवाल का जवाब दिया जाएगा।"**

वोह कहने लगा : "एक **सुवाल** तो येही है कि आप के दीन में **इबादत के पांच वक़्त क्यूं मुक़र्रर हैं ? परमेश्वर (ख़ुदा तआ़ला)** की इबादत जितनी भी की जाए अच्छी ही है।" मुफ़स्सिरे शहीर ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना **मुह़म्मद नईमुद्दीन मुराद आबादी** علیہ رحمۃ اللہ الہادی ने फ़रमाया : "येह **ए'तिराज़** तो ख़ुद तुम्हारे ऊपर भी वारिद होता है।" फिर मौलाना **रह़ूम इलाही** علیہ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने फ़रमाया : "तुम्हारे मज़्हब

www.dawateislami.net

की किताब "**सत्यारथ प्रकाश**" मेरे मकान पर मौजूद है अभी मंगवा कर दिखा सकता हूं।" अल ग़रज़ तै पाया कि पहले नमाज़ पढ़ ली जाए इतनी देर में किताब भी आ जाएगी फिर اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस ग़ैर मुस्लिम के दिल से **कुफ़्र** व ज़लालत की गन्दगी दूर की जाएगी। चुनान्चे येह तीनों बुज़ुर्ग हुक्मे ख़ुदा वन्दी बजा लाने के लिये मस्जिद तशरीफ़ ले गए और वोह ग़ैर मुस्लिम बाहर गेट के क़रीब बैठ गया। नमाज़ के बा'द उस ने येह **सुवालात** किये :

(1) अगर क़ुरआन, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का कलाम है तो थोड़ा थोड़ा क्यूं नाज़िल हुवा ? एक दम क्यूं न आया जब कि ख़ुदा तआ़ला तो इसे यक्बारगी उतारने पर क़ादिर था।

(2) ब क़ौल तुम्हारे, आप के नबी को मे'राज की रात ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ ने बुलाया था, अगर वोह वाक़ेई ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के महबूब थे तो फिर दुन्या में वापस क्यूं भेज दिये गए ?

(3) इबादत पांच वक़्त के मु-तअ़ल्लिक़ सत्यारथ प्रकाश की इबारत देखना मश्रूत़ हुई।

उस के येह सुवाल सुन कर मुबल्लिग़े इस्लाम **आ'ला ह़ज़रत** علیہ رحمۃ ربّ العزت ने फ़रमाया : "मैं तुम्हारे सुवालों के जवाब अभी देता हूं, मगर तुम ने जो **वा'दा** किया है उस पर क़ाइम रहना।" कहा : "हां, मैं फिर कहता हूं कि **अगर आप ने मेरे सुवालात के जवाब मा'क़ूल अन्दाज़ में दे दिये तो मैं अपने बीवी बच्चों समेत मुसल्मान हो जाऊंगा।**" येह सुन कर मुबल्लिग़े इस्लाम की ज़बाने मुबारक से येह

www.dawateislami.net

अल्फ़ाज़ अदा हुए : ''तुम्हारे पहले सुवाल का **जवाब** येह है कि जो शै ऐन ज़रूरत के वक़्त दस्त याब होती है, दिल में उस की वक़्अ़त ज़ियादा होती है इसी लिये कलामे पाक को ब तदरीज (या'नी द-रजा ब द-रजा) नाज़िल किया गया। इन्सान बच्चे की सूरत में आता है फिर जवान होता है फिर बूढ़ा, अल्लाह तआ़ला उसे बूढ़ा पैदा करने पर भी क़ादिर है फिर बूढ़ा पैदा क्यूं न किया ?, इन्सान खेती करता है, पहले पौदा निकलता है फिर कुछ अ़र्से बा'द उस में बाली आती है इस के बा'द दाना बर आमद होता है, वोह ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर तो **क़ादिर** है एक दम ग़ल्ला पैदा कर दे फिर ऐसा क्यूं न करता ?'' अपने पहले सुवाल का मुत्मइन कुन जवाब सुन कर वोह ग़ैर मुस्लिम **ख़ामोश** हो गया। मुबल्लिगे़ इस्लाम का अन्दाज़े तब्लीग़ उस के दिल में घर कर चुका था उस की दिली कैफ़िय्यत चेहरे से इ़यां थी। फिर किताब ''**सत्यारथ प्रकाश**'' आ गई जिस के तीसरे बाब (ता'लीम) पन्दरहवें हेडिंग में येह इ़बारत मौजूद थी : ''**अग्नी होत्र (या'नी पूजा) सुब्ह़ शाम दो ही वक़्त करे।**'' इसी त़रह़ चौथे बाब (ख़ानादारी) **हेडिंग नम्बर 63** में येह इ़बारत मौजूद थी ''संध्या (हिन्दूओं की सुब्ह़ व शाम की इ़बादत) दो ही वक़्त करना चाहिये।'' येह इ़बारत सुन और देख कर उसे दूसरे सुवाल का **जवाब** भी मिल चुका था। अब वोह इस्लाम से मज़ीद क़रीब हो रहा था लिहाज़ा उस ने **मे'राज** वाले सुवाल का जवाब चाहा तो मुबल्लिगे़ इस्लाम, आ़शिक़े ख़ैरुल अनाम आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की ज़बाने मुबारक से इ़ल्मो ह़िक्मत के फूल झड़ने लगे और अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : ''मे'राज वाले सुवाल के

www.dawateislami.net

जवाब को यूं समझना चाहिये ! कि एक बादशाह अपने मुल्क के इन्तिज़ाम के लिये एक नाइब मुक़र्रर करता है, वोह सूबादार या नाइब, बादशाह के ह़स्बे मन्शा ख़िदमात अन्जाम देता है, बादशाह उस की कार गुज़ारियों से **ख़ुश** हो कर अपने पास बुलाता है और इन्आ़म व ख़िल्अ़ते फ़ाख़िरा अ़ता फ़रमाता है न येह कि उसे बुला कर मुअ़त्तल कर देता है और अपने पास रोक लेता है।'' येह दिल नशीन कलाम सुन कर वोह ग़ैर मुस्लिम बे साख़्ता पुकार उठा : **''आप ने मुझे ख़ूब मुत्मइन कर दिया, मुझे मेरे सब सुवालों का जवाब मिल गया, मैं अभी अपने बीवी, बच्चों को लाता हूं और हम सब अपने बात़िल मज़्हब को छोड़ कर दीने इस्लाम में दाख़िल होते हैं।''** (ह़यातेआ'ला ह़ज़रत, जि. 1, स. 287, मुलख़्ख़सन)

म-दनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि जिन मुबारक हस्तियों के सीने **ख़ौफ़े ख़ुदा और इ़श्क़े मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नूर से मुनव्वर होते हैं उन की बारगाह में जो भी आता है ख़ाली हाथ नहीं जाता, गुमराहों को **सिराते मुस्तक़ीम** की दौलत मिलती है, तिश्नगाने **इ़ल्म उ़लूमे नाफ़िआ़** के शीरीं और ठन्डे जामों से सैराब होते हैं, आ़शिक़ाने रसूल का इ़श्क़ मज़ीद फ़रूज़ां होता है, बे अ़-मलों को आ'माले सालिह़ा की त़रफ़ रग़बत मिलती है, नाक़िस, कामिल व अक्मल बन कर दूसरों को **कामिल** बनाने में मस्रूफ़े अ़मल हो जाते हैं।

तारीख़ के अवराक़ पर मुजद्दिदे दीनो मिल्लत **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن की सीरत का बाब निहायत दरख़्शां व

www.dawateislami.net

ताबिन्दा है। आप ने दीने इस्लाम की वोह ख़िदमत की के ज़माना देखता ही रह गया। आप के **फ़ुयूज़ो ब-रकात** से अ़रब व अ़जम मुस्तफ़ीज़ हुए। **इमाम अह़मद रज़ा** के नाम के डंके पूरी दुन्या में बजने लगे। येह इन्ही का फ़ैज़ है कि आज के इस पुर फ़ितन दौर में तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **''दा'वते इस्लामी''** का मुश्कबार म-दनी माह़ोल हर त़रफ़ दीने इस्लाम की ख़ुश्बूएं फैला रहा है। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आ़शिके़ आ'ला ह़ज़रत, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **आ'ला ह़ज़रत** علیہ رحمۃ ربّ العزت की ता'लीमात के मुत़ाबिक़ दीने मतीन की इतने प्यारे व अह़सन अन्दाज़ में ख़िदमत कर रहे हैं कि जिस ने भी इस अन्दाज़ को देखा वोह येह कहने पर मजबूर हो गया कि **''अमीरे अहले सुन्नत (دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه) वाक़ेई इमामे अहले सुन्नत (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه) के आ़शिके़ सादिक़ हैं।''** अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की पुर ख़ुलूस, अनथक कोशिशों के नतीजे में **''दा'वते इस्लामी''** बहुत कम अ़र्से में देखते ही देखते दुन्या भर में फैल गई और दुन्या के 66 से ज़ाइद मुमालिक में सुन्नतों का पैग़ाम पहुंच गया। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ता दमे तह़रीर **दा'वते इस्लामी 36** से ज़ाइद शो'बों में सुन्नतों की ख़िदमत कर रही है। मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! **आ'ला ह़ज़रत** علیہ رحمۃ ربّ العزت की ता'लीमात पर अ़मल पैरा हो कर दीने मतीन की ख़िदमत अह़सन अन्दाज़ में करने के लिये आप भी दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाएं! اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ख़ौफ़े ख़ुदा

www.dawateislami.net

व इ़श्क़े मुस्त़फ़ा, आ'माले सालिह़ा की दौलते बेश बहा ह़ासिल होगी, गुनाहों से नफ़रत का ज़ेह्न बनेगा और हमारी आख़िरत संवरने के अस्बाब बन जाएंगे। आ़शिक़ाने रसूल के साथ दा'वते इस्लामी के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र इख़्तियार कीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप को फ़ैज़ाने रज़ा भी नसीब होगा। ऐसी ही एक बहार मुला-ह़ज़ा हो :

म-दनी क़ाफ़िले की ब-र-कत से आ'ला ह़ज़रत का दीदार हो गया

علیہ رحمۃ ربّ العزت

पंजाब (पाकिस्तान) के शहर ख़ानेवाल के मुक़ीम इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि हमारे अ़लाक़े के **दा'वते इस्लामी** के ज़िम्मादार इस्लामी भाई काफ़ी अ़र्से से **इन्फ़िरादी कोशिश** के ज़रीए **मुझे म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र करने की तरग़ीब दिला रहे थे लेकिन मैं हमेशा उन को टाल दिया करता था। आख़िरे कार उन की इन्फ़िरादी कोशिश का स-मरा ज़ाहिर हुवा और मैं म-दनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बन गया। हमारा म-दनी क़ाफ़िला ख़ानेवाल के एक देहाती अ़लाक़े में मौजूद एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के **मज़ार शरीफ़** से मुल्हिक़ एक **मस्जिद** में ठहरा। म-दनी क़ाफ़िले के आख़िरी दिन मैं उन बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मज़ार शरीफ़ के पास बैठा **दुरूद शरीफ़** पढ़ रहा था कि मेरी आंख लग गई। सर की आंखें तो क्या बन्द हुईं दिल की आंखें खुल गईं, क्या देखता हूं कि एक **नूरानी चेहरे वाले बुज़ुर्ग** तशरीफ़ फ़रमा हैं जिन्हों ने **सफ़ेद लिबास** ज़ैबे तन किया हुवा है और **सफ़ेद रंग की चादर** ओढ़ रखी है। उन के पीछे भी चन्द नूरानी चेहरे

www.dawateislami.net

वाले बुज़ुर्ग बैठे हुए हैं। मैं ने उन्ही में से एक से पूछा कि "**येह बुज़ुर्ग कौन हैं ?**" उन्हों ने फ़रमाया : "येह सुन्नियों के इमाम सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن हैं।" तो यूं म-दनी क़ाफ़िले की **ब-र-कत** से सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की ख़्वाब में **ज़ियारत** नसीब हो गई।

सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो
लेने को ब-र-कतें क़ाफ़िले में चलो पाओगे राह़तें क़ाफ़िले में चलो

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की आ'ला ह़ज़रत पर रह़मत हो और उन के स-दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(7) तंगदस्ती की शिकायत करने वाले पर इन्फ़िरादी कोशिश

आ'ला ह़ज़रत علیہ رحمۃ ربّ العزت फ़रमाते हैं : "सादाते किराम में से एक साह़िब ज़ादे गरदिशे अय्याम की ज़द में आ कर **तंगदस्ती** में मुब्तला थे। वोह मेरे पास तशरीफ़ लाते और अपने ह़ालात से दिल बरदाश्ता हो कर मुफ़्लिसी व ग़ुरबत की शिकायत किया करते। एक दिन जब वोह बहुत ही **परेशान व मग़्मूम** थे मैं ने उन से कहा : "साह़िब ज़ादे ! येह इर्शाद फ़रमाइये कि जिस औ़रत को बाप ने **त़लाक़** दे दी हो, क्या वोह बेटे के लिये **ह़लाल** हो सकती है ?" उन्हों ने फ़रमाया : "नहीं।" मैं ने कहा : "एक मर्तबा आप के जद्दे आ'ला अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते **सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा** शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने तन्हाई में अपने चेहरए मुबा-रका पर हाथ फैर कर इर्शाद फ़रमाया : "**ऐ दुन्या !**

www.dawateislami.net

किसी और को धोका दे, मैं ने तुझे ऐसी त़लाक़ दी जिस में कभी रज्अ़त नहीं।" शहज़ादे हुज़ूर ! क्या इस क़ौल के बा'द भी सादाते किराम का गु़रबत व इफ़्लास में मुब्तला होना तअ़ज्जुब की बात है ?" वोह कहने लगे : **"वल्लाह ! आप की इन बातों ने मुझे दिली सुकून बख़्श दिया।"** اَلۡحَمۡدُلِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ इस के बा'द शहज़ादे ने कभी भी अपनी गु़रबत का शिक्वा न किया। (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, ह़िस्सा : 1, स. 162, मुलख़्ख़सन)

म-दनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत से हमें एक म-दनी फूल तो येह मिला कि कभी भी **मुश्किल ह़ालात** से घबरा कर बहुत ज़ियादा **परेशान** नहीं होना चाहिये। काम्याबी दुन्यवी माल व दौलत की कसरत में नहीं बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की **रिज़ा पर राज़ी** रहने में है। दूसरा म-दनी फूल येह मिला कि जब भी किसी इस्लामी भाई की इस्लाह़ की ज़रूरत पड़े तो बड़ी **ह़िक्मते अ़-मली** से उस के मर्तबा व मक़ाम का लिह़ाज़ करते हुए **नेकी की दा'वत** देनी चाहिये। मज़्कूरा ह़िकायत में **आ'ला ह़ज़रत** علیہ رحمۃ ربّ العزت ने कितने प्यार भरे अन्दाज़ में सय्यिद ज़ादे पर इन्फ़िरादी कोशिश की, न कोई ऐसा लफ़्ज़ बोला जिस से उन को नदामत होती न ही **सख़्त लहजा** इस्ति'माल किया। **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त हमें भी सह़ीह़ अन्दाज़ में **नेकी की दा'वत** की धूम मचाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمین بجاہِ النّبیِّ الامین صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की आ'ला ह़ज़रत पर रह़मत हो और उन के स-दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो** اٰمین بجاہِ النّبیِّ الامین صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

(8) सोने की अंगूठी पहनने वाले की इस्लाह़

अ़स्र की नमाज़ के बा'द बड़ा ही पुरकैफ़ समां था, दूर व नज़्दीक से आए हुए लोग मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, **आ'ला ह़ज़रत** عليہ رحمۃ ربّ العزت की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर एक सच्चे आ़शिक़े रसूल की **ज़ियारत व मुलाक़ात** से अपने दिलों को मुनव्वर कर रहे थे। इतने में एक साह़िब **सोने की अंगूठी** पहने हुए ह़ाज़िर हुए तो ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, **आ'ला ह़ज़रत** عليہ رحمۃ ربّ العزت ने **نَهْىٌ عَنِ الْمُنْكَر** (या'नी बुराई से रोकने) का फ़रीज़ा अन्जाम देते हुए कुछ यूं इर्शाद फ़रमाया : ''मर्द को सोना पहनना **ह़राम** है। सिर्फ़ एक नंग की चांदी की अंगूठी जो साढ़े चार माशा से कम की हो उस की इजाज़त है। जो कोई सोने, तांबे या पीतल की अंगूठी पहने या चांदी की साढ़े चार माशे से ज़ियादा वज़्न की एक अंगूठी पहने या कई अंगूठियां पहने अगर्चे सब मिल कर साढ़े चार माशे से कम हों तो उस की नमाज़ मक्रूहे तह़रीमी है।'' एक आ़लिमे बा अ़मल के इस कलाम ने उन साह़िब के दिल पर जो रूह़ानी असर किया होगा उसे बयान करने की ह़ाजत नहीं।

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, ह़िस्सा दुवुम, स. 197, मक-त-बतुल मदीना)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की आ'ला ह़ज़रत पर रह़मत हो और उन के स-दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो** اٰمين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(9) मे'मार पर इन्फ़िरादी कोशिश

ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत मौलाना सय्यिद **अय्यूब अ़ली** عليه رَحْمَةُ اللّٰهِ القَوى का बयान है : ''मस्जिद शरीफ़ की तौसीअ़ के लिये

www.dawateislami.net

गुस्ल ख़ाना, कूंआं, वुज़ूख़ाना वग़ैरा पर छत डालनी थी। मिस्तरी अ़ली हुसैन क़ादिरी र-ज़वी मर्ह़ूम عليه رحمة القيوم ने सुतूनों की ता'मीर शुरूअ़ ही की थी कि ज़ोहर के वक़्त **आ'ला ह़ज़रत** عليه رحمة رب العزت तशरीफ़ लाए और सुतूनों को देख कर इर्शाद फ़रमाया : ''भाई अ़ली हुसैन ! **मस्जिद के लिये येह सुतून कुछ अच्छे मा'लूम नहीं होते, इन्हें ख़ूब सूरत बनाइये।''** फिर फ़रमाया : ''मैं ने अपने ज़ाती मकान की ता'मीर के वक़्त कभी दख़्ल अन्दाज़ी नहीं की। सिर्फ़ मज़्बूत़ व ख़ूब सूरत अलमारियां बनाने के लिये ज़रूर कहा था ताकि दीनी किताबें मह़फ़ूज़ रहें।''

(ह़याते आ'ला ह़ज़रत, जि. 1, स. 96)

म-दनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत से हमें येह दर्स मिला कि दीनी उमूर में हमेशा **ख़ुश उस्लूबी** से काम करना चाहिये। मस्जिदों और दीगर दीनी इ़मारतों में सफ़ाई और मे'यार को पेशे नज़र रखना चाहिये। येह न हो कि अपने ज़ाती घरों पर तो ख़ूब दिल खोल कर ख़र्च करें, लेकिन जब **दीन** का मुआ़-मला आए तो सुस्ती व कोताही और कन्जूसी से काम लें। दीन का दर्द रखने वालों को येह बात किसी त़रह़ भी ज़ैब नहीं देती। **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला हमें शैत़ान के मक्रो फ़रेब से बचने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और दीने इस्लाम की सर बुलन्दी के लिये तन, मन, धन क़ुरबान करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। **اٰمين بجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين** صلى الله تعالى عليه واٰله وسلم

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की आ'ला ह़ज़रत पर रह़मत हो और उन के स-दक़े**

www.dawateislami.net

हमारी मग़्फ़िरत हो اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(10) जज़्बाती मुरीद पर इन्फ़िरादी कोशिश

पाक व हिन्द की सर ज़मीन पर जब बा'ज़ लोगों ने **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तौहीन कर के अपना दीन व ईमान बिगाड़ा और ख़ुद को दाइरए इस्लाम से ख़ारिज कर के हुदूदे मुस्लिमीन से जुदा कर लिया तो ह़ामिये सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, रहबरे शरीअ़त, आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن ने उन के **मु-तअ़ल्लिक़ ह़ुक्मे** शर-ई तक़्रीरन व तह़रीरन बयान किया। अब चाहिये तो येह था कि येह लोग फ़ौरन अपनी गुस्ताख़ियों से **तौबा** कर के तजदीदे ईमान करते और **राहे ह़क़** के राही बन जाते। मगर अफ़्सोस ! उन्हों ने ऐसा न किया। चुनान्चे मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, **आ'ला ह़ज़रत** علیہ رحمۃ ربّ العزت ने अपना फ़रीज़ए दीन अदा करते हुए अ़लल ए'लान मुसल्मानों को इन लोगों की अस्ली सूरत से आगाह किया। इन त़ाग़ूतों से और तो कुछ न बन पड़ा, बस अपनी जग हंसाई पर पेचो ताब खाते हुए **आ'ला ह़ज़रत** علیہ رحمۃ ربّ العزت की **मुख़ा-लफ़त** पर कमर बस्ता हो गए। जब ग़ुस्सा ह़द से सिवा हो जाता तो ख़त़ में एक दो गालियां लिख कर **आ'ला ह़ज़रत** علیہ رحمۃ ربّ العزت को ब ज़रीअ़ए डाक भेज दिया करते और समझते कि बहुत बड़ा कारे नुमायां किया। एक मर्तबा इसी त़रह़ गालियों से भरा हुवा एक ख़त़ आया, पढ़ने वाले ने चन्द सत़रें पढ़ कर ख़त़ अ़लाह़िदा रखते हुए अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! किसी

www.dawateislami.net

बद मज़्हब ने अपनी दुश्मनी का सुबूत दिया है।'' ह़ल्क़ए इरादत में शामिल होने वाले एक नए **मुरीद** वोह ख़त़ उठा कर पढ़ने लगे। इत्तिफ़ाक़ की बात थी कि भेजने वाले का जो नाम और पता लिखा था वोह उन साहिब के अत़राफ़ का था। नए मुरीद को बहुत ज़ियादा रन्ज हुवा। उस वक़्त तो ख़ामोश रहे लेकिन जब **आ'ला ह़ज़रत** علیہ رحمۃ ربّ العزت मग़्रिब की नमाज़ के बा'द दौलत कदे की त़रफ़ जाने लगे तो आप को रोक कर कहा : ''उस वक़्त जो ख़त़ मैं ने पढ़ा था किसी संगदिल ने गालियां लिख कर भेजी थीं। मेरी राय है कि इन पर **मुक़द्दमा** किया जाए। ऐसे लोगों को सज़ा दिलवाई जाए ताकि दूसरों के लिये इ़ब्रत का नुमूना बन जाएं वरना दूसरों को भी ऐसी जुरअत होगी।''

ह़िल्मो ह़या के पैकर ने अपने नए मुरीद की येह बात सुनी तो येह कह कर अन्दर चले गए : ''तशरीफ़ रखिये ! मैं अभी आता हूं।'' फिर दस पन्दरह **ख़ुतूत़** दस्ते मुबारक में लिये बाहर तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : ''ज़रा इन्हें पढ़िये !'' येह देख कर पास बैठे हुए लोग बड़े **ह़ैरान हुए** कि येह न जाने किस क़िस्म के ख़ुतूत़ हैं ? ख़याल हुवा कि शायद इसी क़िस्म के गाली नामे होंगे। जिन के पढ़वाने का मक़्सूद येह होगा कि इस क़िस्म के ख़त़ आज कोई **नई बात** नहीं, बल्कि ज़माने से आ रहे हैं। लेकिन वोह साहिब ख़त़ पढ़ते जा रहे थे और उन का चेहरा **ख़ुशी** से दमक्ता जा रहा था। जब सब ख़त़ पढ़ चुके तो **आ'ला ह़ज़रत** علیہ رحمۃ ربّ العزت ने फ़रमाया : **''पहले इन ता'रीफ़ करने वालों बल्कि ता'रीफ़ का पुल बांधने वालों को इन्आ़म व इक्राम, जागीर व**

www.dawateislami.net

अ़ति़य्यात से मालामाल कर दीजिये, फिर गाली देने वालों को सज़ा दिलवाने की फ़िक्र कीजियेगा ।'' बा अदब व जज़्बाती मुरीद ने अ़र्ज़ की : ''हुज़ूर ! जी तो येही चाहता है कि इन सब को इतना **इन्आ़म व इक्राम** दिया जाए जो न सिर्फ़ इन को बल्कि इन की नस्लों को भी काफ़ी हो। मगर येह मेरी वुस्अ़त से बाहर है।'' फ़रमाया : ''जब आप मुख़्लिस को नफ़्अ़ नहीं पहुंचा सकते, तो मुख़ालिफ़ को नुक़्सान भी न पहुंचाइये।''

म-दनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ'ला ह़ज़रत علیہ رحمۃ ربّ العزت उसी नबी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के सच्चे आ़शिक़ थे जो अपने ज़ाती दुश्मनों को भी दुआ़ओं और अ़ता़ओं से नवाज़ा करते थे :

वोह पत्थर मारने वालों को देते हैं दुआ़ अक्सर
कोई लाओ मिसाल ऐसी शराफ़त हो तो ऐसी हो

जहां मुजरिम को मिलती हैं पनाहें भी अ़ता़एं भी
मदीने में जो लगती है अ़दालत हो तो ऐसी हो

हमें भी चाहिये कि हम अपनी ज़ात की ख़ातिर किसी पर शिद्दत व सख़्ती न करें हमारी **महब्बत व अ़दावत** सिर्फ़ और सिर्फ़ **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये होनी चाहिये। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें हिक्मते अ़-मली के साथ दीने मतीन की ख़िदमत करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। **اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین** صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की आ'ला ह़ज़रत पर रह़मत हो और उन के स-दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो **اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین** صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

(11) लोगों को बद गुमानी से बचाओ !

बरसात का मौसिम था, इशा के वक़्त हवा के तेज़ झोंके मस्जिद का **चराग़** बार बार गुल कर रहे थे। उस ज़माने में नोंरवे की दिया सलाई इस्ति'माल होती थी जिसे रोशन करते वक़्त गन्धक की बदबू निकलती थी। इसी लिये **आ'ला हज़रत** عليه رحمة رب العزت का हुक्म था कि दिया सलाई मस्जिद से बाहर जा कर रोशन की जाए ताकि मस्जिद में बदबू न हो। अब बार बार चराग़ रोशन करने में बड़ी **दिक़्क़त** हो रही थी। इस तक्लीफ़ की मुदा-फ़-अत आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के ख़ादिमे ख़ास हाजी किफ़ायतुल्लाह साहिब ने येह की के एक लालटेन में शीशा लगवा कर कुप्पी में अरन्डी का तेल डाला और रोशन कर के मस्जिद के अन्दर ले जा कर रख दी। जब **आ'ला हज़रत** عليه رحمة رب العزت की नज़र उस पर पड़ी तो इर्शाद फ़रमाया : ''हाजी साहिब ! **आप ने येह मस्अला बारहा सुना होगा कि मस्जिद में बदबूदार तेल नहीं जलाना चाहिये !**'' उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''हुज़ूर ! इस में **अरन्डी का तेल** है।'' फ़रमाया : ''राहगीर देख कर कैसे समझेंगे कि इस लालटेन में अरन्डी का तेल जल रहा है ? वोह तो येही कहेंगे कि ''दूसरों को **फ़तवा** दिया जाता है कि मिट्टी का **बदबूदार तेल** मस्जिद में न जलाओ और ख़ुद मस्जिद में लालटेन जलवा रहे हैं।'' हां ! अगर आप बराबर इस के पास बैठे हुए येह कहते रहें कि **''इस लालटेन में अरन्डी का तेल है, इस लालटेन में अरन्डी का तेल है''** तो फिर मुज़ा-यक़ा नहीं।'' इस इस्लाही गुफ़्त-गू को सुन कर हाजी साहिब ने फ़ौरन लालटेन गुल कर दी। (हयाते आ'ला हज़रत, जि. 1, स. 150)

www.dawateislami.net

म-दनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत से हमें येह दर्स मिला कि जिस त़रह़ बद गुमानी करना मन्अ़ है इसी त़रह़ लोगों को **बद गुमानी** से बचाना भी बहुत ज़रूरी है। ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : ''مَنْ سَلَکَ مَسَالِکَ التُّهَمِ اُتُّهِمَ'' या'नी जो तोहमत के रास्तों पर चलेगा उसे तोहमत लगेगी।'' (अल मक़ासिदुल ह़-सना, अल ह़दीस : 1133, जि. 1, स. 421, दारुल किताबुल अ़-रबी बैरूत) येह भी मा'लूम हुवा कि मस्जिदों को हर त़रह़ की बदबू से **बचाना** बहुत ज़रूरी है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के घरों को हमेशा साफ़ सुथरा और ख़ुश्बूदार रखना चाहिये। मस्जिदों को साफ़ सुथरा रखने के बारे में मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का रिसाला **''मस्जिदें ख़ुश्बूदार रखिये''** का मुत़ा-लआ़ फ़रमाएं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें हर हर दीनी मुआ़-मले में एह़तियात़ से काम लेने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और मसाजिद का अदब व एह़तिराम करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। **اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین** صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की आ'ला ह़ज़रत पर रह़मत हो और उन के स-दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो** **اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین** صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(12) तारिके सुन्नत पर इन्फ़िरादी कोशिश

ह़ाजी ख़ुदा बख़्श साह़िब भी उन सआ़दत मन्दों में से थे जो इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, रहबरे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, सरकारे

www.dawateislami.net

आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ الرَّحۡمٰن के पीछे नमाज़ अदा किया करते थे। आप का बयान है कि एक दिन फ़ज्र की नमाज़ के बा'द आप का एक मुरीद ह़ाज़िरे ख़िदमत था जिस की दाढ़ी ह़द्दे शर-अ़ (या'नी एक मुठ्ठी) से कम थी। वोह अपने पीरो मुर्शिद से कोई **वज़ीफ़ा** लेना चाहता था। जब उस ने अपनी ख़्वाहिश का इज़्हार किया तो **आ'ला ह़ज़रत** علیہ رحمۃ ربّ العزت ने अपने उस मुरीद पर इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए इर्शाद फ़रमाया : **''जिस वक़्त तुम्हारी दाढ़ी शर-अ़ के मुत़ाबिक़ हो जाएगी, उस वक़्त मैं वज़ीफ़ा वग़ैरा बता दूंगा।''** येह सुन कर उस ने एक बुज़ुर्ग का ख़त़ दिया जिस में सिफ़ारिश की गई थी कि इसे वज़ीफ़ा दे दिया जाए। **आ'ला ह़ज़रत** علیہ رحمۃ ربّ العزت ने फ़रमाया : ''जब तक तुम दाढ़ी ह़द्दे शर-अ़ तक न बढ़ाओगे उस वक़्त तक किसी की भी सिफ़ारिश तुम्हारे ह़क़ में क़बूल न करूंगा और न ही तुम्हें कोई वज़ीफ़ा बताऊंगा। जब दाढ़ी ह़द्दे शर-अ़ के मुत़ाबिक़ हो जाएगी तो मैं ख़ुद ही बता दूंगा, किसी की **सिफ़ारिश की ज़रूरत** भी न पड़ेगी।'' (ह़यातेआ'ला ह़ज़रत, जि. 1, स. 155)

म-दनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दाढ़ी मुंडवाना और कतरवा कर एक मुठ्ठी से छोटी कर देना दोनों ही ह़राम है। अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त हमें मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों पर अ़मल पैरा होने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الۡاَمِين صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की आ'ला ह़ज़रत पर रह़मत हो और उन के स-दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो** اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الۡاَمِين صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَى الۡحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

(13) एक पीर साह़िब पर इन्फ़िरादी कोशिश

आ'ला ह़ज़रत علیہ رحمۃ ربّ العزت मद्रसतुल ह़दीस पीलीभीत के सालाना जल्से में पीलीभीत तशरीफ़ लाए तो एक रोज़ ह़ज़रत मुह़द्दिस सूरती علیہ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوی के हमराह पीलीभीत के मशहूर बुज़ुर्ग **''शाह जी मुह़म्मद शेर मियां''** رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ से मिलने तशरीफ़ ले गए। वहां पहुंच कर देखा कि शाह साह़िब बे ह़िजाबाना (या'नी दरमियान में कोई पर्दा लटकाए बग़ैर) औ़रतों को **बैअ़त** करा रहे हैं। **आ'ला ह़ज़रत** علیہ رحمۃ ربّ العزت की ग़ैरते ईमानी ने वहां रुकना गवारा न किया और आप उन से मिले बग़ैर ही **वापस** तशरीफ़ ले आए। दूसरा कोई होता, तो बिगड़ जाता लेकिन ह़ज़रत शाह जी मियां साह़िब رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ का कमाले बे नफ़्सी व ह़क़ पसन्दी इस त़रह़ जल्वा गर हुवा कि शाम को **आ'ला ह़ज़रत** علیہ رحمۃ ربّ العزت जब बरेली शरीफ़ जाने लगे तो शाह जी मियां साह़िब رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ स्टेशन तक पहुंचाने गए और सुब्ह़ के वाक़िए़ पर इज़्हारे अफ़्सोस कर के फ़रमाया : **''मौलाना, अब आइन्दा मैं औ़रतों को पसे पर्दा बिठा कर बैअ़त लिया करूंगा।''** इस के बा'द **आ'ला ह़ज़रत** علیہ رحمۃ ربّ العزت ने उन से मुसा-फ़ह़ा व मुआ़-नक़ा फ़रमाया।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की आ'ला ह़ज़रत पर रह़मत हो और उन के स-दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो** اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(14) शर-ई ग़-लत़ी करने वाले पर इन्फ़िरादी कोशिश

ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, ह़ज़रत मौलाना सय्यिद अय्यूब

www.dawateislami.net

अ़ली साह़िब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का बयान है : ''एक रोज़ एक साह़िब किसी ग़ैर मुस्लिम को **आ'ला ह़ज़रत** علیہ رحمۃ رب العزت की बारगाह में ले कर आए और अ़र्ज़ की : ''येह **मुसल्मान** होना चाहता है ।'' फ़रमाया : ''**कलिमा** पढ़वा दिया है ?'' अ़र्ज़ की : ''अभी नहीं पढ़वाया ।'' येह सुन कर मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने बिला ताख़ीर व तसाहुल फ़ौरन उस ग़ैर मुस्लिम को कहा : ''पढ़ो ! ''لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُولُ الله'' **अब कहो** ! ''मैं इस पर ईमान लाया, मेरा दीन मुसल्मानों का दीन है । एक ख़ुदा के सिवाए सब मा'बूद झूटे हैं । **अल्लाह** के सिवा किसी की पूजा नहीं है । ज़िन्दा करने वाला एक **अल्लाह** है, मारने वाला एक **अल्लाह** है, पानी बरसाने वाला एक **अल्लाह** है, रोज़ी देने वाला एक **अल्लाह** है, सच्चा दीन ''**इस्लाम**'' है, बाक़ी सब दीन झूटे हैं ।'' इस के बा'द क़ैंची मंगवा कर उस के बालों की चोटी काटी और कटोरे में पानी मंगवा कर थोड़ा सा ख़ुद पिया बाक़ी उसे दिया और उस से जो बचा, वोह ह़ाज़िरीन मुसल्मानों ने थोड़ा थोड़ा पिया । उस ख़ुश क़िस्मत नौ मुस्लिम का इस्लामी नाम ''**अ़ब्दुल्लाह**'' रखा गया । फिर जो साह़िब उसे ले कर आए थे उन से फ़रमाया : ''जिस वक़्त कोई इस्लाम में आने को कहे, फ़ौरन कलिमा पढ़ा देना चाहिये कि अगर कुछ भी देर की तो गोया उतनी देर उस के कुफ़्र पर रहने की مَعَاذَالله रिज़ा मन्दी है । आप को चाहिये था कि उसे फ़ौरन कलिमा पढ़ा देते फिर यहां लाते या और कहीं ले जाते ।'' येह सुन कर उस ने दस्त बस्ता अ़र्ज़ की : ''ह़ुज़ूर ! मुझे येह बात मा'लूम न

www.dawateislami.net

थी मैं अपनी ग़-लती पर नादिम हो कर सच्चे दिल से **तौबा** करता हूं।'' फ़रमाया : ''अल्लाह करीम मुआ़फ़ फ़रमाने वाला हे, आप कलिमा पढ़ लीजिये।'' उस ने फ़ौरन कलिमा पढ़ा और सलाम व दस्त बोसी के बा'द वापस चला गया। (ह़याते आ'ला ह़ज़रत, जि. 1, स. 286)

वोह तौह़ीदो रिसालत के मआ़नी जिस ने समझाए
ह़िसारे दीनो मिल्लत, हादिये राहे हुदा तुम हो

शरीअ़त में इमामत का रहा सहरा तुम्हारे सर
जो है अहले त़रीक़त के लिये क़िब्ला नुमा तुम हो

वोह जिस के ज़ोह्दो तक़्वा को सराहा शान वालों ने
कहा यूं पेशवाओं ने हमारे पेशवा तुम हो

म-दनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत से हमें येह म-दनी फूल मिला कि जब भी कोई ग़ैर मुस्लिम **मुसल्मान** होना चाहे तो उसे फ़ौरन **कलिमा** पढ़ा देना चाहिये, इस के बा'द मज़ीद अह़काम सिखाने के लिये किसी आ़लिमे दीन के पास ले जाना चाहिये। ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर का करोड़हा करोड़ एह़सान कि उस ख़ुदाए ह़न्नान व मन्नान ने हमें मुसल्मान बनाया और प्यारे ह़बीब मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत में पैदा फ़रमाया। अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला हमें ता दमे आख़िर दीने **इस्लाम** पर साबित क़दम रखे और हमारा ख़ातिमा बिलख़ैर फ़रमाए। اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की आ'ला ह़ज़रत पर रह़मत हो और उन के स-दक़े

www.dawateislami.net

हमारी मग़्फ़िरत हो اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(15) पहली सफ़ में नमाज़ अदा करने के मु-तअ़ल्लिक़ इन्फ़िरादी कोशिश

एक मर्तबा जब नमाज़े मग़्रिब की जमाअ़त क़ाइम हुई तो ह़ाजी मुह़म्मद शाह ख़ान साह़िब क़ादिरी र-ज़वी ने **सफ़े अव्वल** में शामिल होने की ग़रज़ से शिमाली फ़सील पर खड़े हो कर नमाज़ अदा की। **आ'ला ह़ज़रत** علیہ رحمۃ ربّ العزت ने उन को देख लिया था नमाज़ के बा'द अपने पास बुला कर इर्शाद फ़रमाया : "ख़ान साह़िब ! इस त़रह़ सफ़े अव्वल का **सवाब** नहीं मिलता क्यूं कि येह जगह मस्जिद से ख़ारिज है, आइन्दा ख़याल कीजियेगा। अगर लोगों को सफ़े अव्वल के **सवाब** का इ़ल्म हो जाए तो **क़ुरआ अन्दाज़ी** करना पड़े।"

(ह़यातेआ'ला ह़ज़रत, जि. 3, स. 86)

म-दनी फूल

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ कितना प्यारा अन्दाज़े तब्लीग़ था इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن का कि **शर-ई मस्अला** भी बता दिया और पहली सफ़ में नमाज़ अदा करने की **फ़ज़ीलत** भी बता दी। मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी चाहिये कि **पांचों नमाज़ें मस्जिद की पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त** अदा करें। अगर येह आ़दत बन गई तो اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ नमाज़ की ब-र-कत से सब बिगड़े काम संवर

www.dawateislami.net

जाएंगे। اَلْحَمْدُلِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ शैख़े त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़त़ा कर्दा **72 म-दनी इन्आ़मात** में से एक **म-दनी इन्आ़म** येह भी है : ''क्या आज आप ने पांचों नमाज़ें मस्जिद की पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त अदा फ़रमाई ? नीज़ हर बार किसी को अपने साथ मस्जिद में ले जाने की कोशिश फ़रमाई ?''

अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला हमें तमाम नमाज़े मस्जिद की पहली सफ़ में बा जमाअ़त अदा करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْامین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की आ'ला ह़ज़रत पर रह़मत हो और उन के स-दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْامین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(16) नवाब साह़िब पर इन्फ़िरादी कोशिश

ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, मलिकुल उ़-लमा ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना ज़-फ़रुद्दीन बिहारी علیہ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی लिखते हैं कि ''एक साह़िब जिन्हें नवाब साह़िब कहा जाता था, मस्जिद में नमाज़ पढ़ने आए और खड़े खड़े **बे परवाई** से अपनी छड़ी **मस्जिद के फ़र्श** पर गिरा दी, जिस की आवाज़ ह़ाज़िरीन ने सुनी। **आ'ला ह़ज़रत** علیہ رحمۃ ربّ العزت ने फ़रमाया : **''नवाब साह़िब ! मस्जिद में ज़ोर से क़दम रख कर चलना भी मन्अ़ है, फिर कहां छड़ी को इतनी ज़ोर से डालना !''** नवाब साह़िब ने मेरे सामने वा'दा किया कि اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आइन्दा ऐसा नहीं होगा।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की आ'ला ह़ज़रत पर रह़मत हो और उन के स-दक़े

www.dawateislami.net

हमारी मग़्फ़िरत हो اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(17) ख़त़रनाक वस्वसों से किस त़रह़ बचाया

ख़लीफ़ए मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द ह़ज़रत मौलाना ए'जाज़ वली ख़ां साह़िब علیہ رحمۃ اللہ الواہب का बयान है : ''जनाब मौलाना शाह आ़रिफ़ बिल्लाह साह़िब ख़त़ीब ख़ैरुल मसाजिद ख़ैर नगर मेरठ अपने वालिदे माजिद ह़बीबुल्लाह साह़िब क़ादिरी र-ज़वी का वाक़िआ़ बयान करते हुए फ़रमाते हैं : ''एक दिन बद मज़्हबों के **अ़क़ाइद** पर गुफ़्त-गू हो रही थी वालिद साह़िब ने कहा : ''कम अज़ कम इस क़दर बात तो ज़रूर है कि येह बद मज़्हब हमारे क़िब्ले की त़रफ़ मुंह कर के नमाज़ तो ज़रूर पढ़ते हैं और अहले **क़िब्ला** को बुरा कहने की मुमा-न-अ़त आई है।'' अभी येह मजलिस ख़त्म भी न होने पाई थी कि फ़ौरन ही बरेली शरीफ़ से तार पहुंचा कि **''फ़ौरन बरेली आओ''** वोह घबरा गए। मौलवी मुह़म्मद हुसैन साह़िब ताजिर त़िलिस्मी प्रेस से मश्वरा किया, उन्हों ने कहा : ''फ़ौरन जाइये।'' चुनान्चे बरेली शरीफ़ पहुंचे आस्तानए आ़लिया पर ह़ाज़िर हो कर सब से **दरयाफ़्त** किया किसी ने तार भेजना बयान न किया। सख़्त तशवीश हुई, ख़याल किया मुख़ालिफ़ीन की येह चाल है कि हुसैन ह़बीबुल्लाह मेरठ से हट जाएं, इस लिये कि इन दिनों बा'ज़ मुआ़-मलात चल रहे हैं। आख़िरे कार तार ऑफ़िस में गए, मा'लूम हुवा कि **यहां से तार गया है, लेकिन देने कौन आया था येह याद नहीं।** बहुत मु-तफ़क्किर हुए कि येह क्या माजरा है ? इमामे अहले

www.dawateislami.net

सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने ख़ुद कुछ फ़रमाया न ही इन्हें जुरअत हुई कि दरयाफ़्त करते । तीसरे दिन मेरठ वापसी का क़स्द किया, **आ'ला ह़ज़रत** علیہ رحمۃ ربّ العزت मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा थे। जब इजाज़त चाही तो फ़रमाया : ''मौलाना ! इस आयते करीमा को पढ़िये : لَيْسَ الْبِرَّ اَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَ الْمَغْرِبِ (तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : कुछ अस्ल नेकी येह नहीं कि मुंह मश्रिक़ या मग़्रिब की त़रफ़ करो ।) (पारह : 2, आयत : 177) ।'' मौलाना फ़रमाते हैं कि ''रो'ब की वजह से मुझ से आयत न पढ़ी गई, मेरे साथ मौलवी मुह़म्मद हुसैन साह़िब मेरठी भी थे, उन्हों ने आयते करीमा पूरी की । मेरे दिल में मअ़न ख़याल गुज़रा कि **आ'ला ह़ज़रत** علیہ رحمۃ ربّ العزت ने इस्लाह़ की ग़रज़ से मुझे यहां बुलवाया था और **सिर्फ़ एक आयत तिलावत कर के इस्लाह़ फ़रमा दी ।''**

(ह़याते आ'ला ह़ज़रत, जि. 3, स. 167)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की आ'ला ह़ज़रत पर रह़मत हो और उन के स-दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(18) बैअ़त तोड़ने वाले की इस्लाह़

ह़ज़रत मौलाना सय्यिद अय्यूब अ़ली علیہ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی का बयान है : ''सुब्ह़ 9 या 10 बजे का वक़्त होगा, मैं और बिरादरम क़नाअ़त अ़ली फाटक में काम कर रहे थे कि एक नौ जवान साह़िब ज़ादे ब ह़ैसिय्यते मुसाफ़िर तशरीफ़ लाए और सलाम कर के एक त़रफ़

ख़ामोश बैठ गए। हम लोगों ने दौलत ख़ाना दरयाफ़्त किया, फ़रमाया : "**मेरठ** का रहने वाला हूं।" पूछा : "कैसे आना हुवा ?" इस पर वोह बे इख़्तियार रोने लगे, बार बार दरयाफ़्त किया जाता मगर इन्किशाफ़ न होता था। बिल आख़िर बहुत इस्रार के बा'द फ़रमाया : "मैं **इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, पीरे तरीक़त, रहबरे शरीअ़त, आ'ला हज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ الرَّحۡمٰن का मुरीद हूं। इस साल जब मैं सिल्सिलए चिश्तिया के अ़ज़ीम पेशवा **हज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ हसन सन्जरी अजमेरी** علیہ رَحۡمَةُ اللهِ القَوِی के उ़र्स मुबारक में ह़ाज़िर हुवा तो वहां एक बुज़ुर्ग से मिला। बा'ज़ लोगों ने मुझ से कहा : "तुम इन बुज़ुर्ग के मुरीद हो जाओ !" मैं ने कहा : "मैं तो **इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, पीरे तरीक़त, रहबरे शरीअ़त, सरकारे आ'ला हज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ الرَّحۡمٰن से बैअ़त हूं।" उन्हों ने कहा : "वहां तुम शरीअ़त में बैअ़त हुए हो, यहां तरीक़त में बैअ़त हो जाओ।" चुनान्चे मैं उन लोगों की बातों में आ कर उन बुज़ुर्ग का मुरीद हो गया। जब सोया तो ख़्वाब में देखा कि **आ'ला हज़रत** علیہ رحمۃ ربّ العزت तशरीफ़ लाए, चेहरए अन्वर पर जलाल **नुमायां** था मुझ से फ़रमाया : "**ला हमारा श-जरा वापस कर दे !**" इतने में आंख खुल गई। बस उसी रोज़ से मेरा किसी काम में **दिल नहीं लगता।** पढ़ाई भी छोड़ दी। हर वक़्त दिल येही चाहता है कि **धाड़ें मार मार कर ख़ूब रोऊं।** हम लोगों ने उसे तसल्ली देते हुए कहा : "आप घबराएं नहीं ! ज़ोहर के वक़्त **आ'ला हज़रत** علیہ رحمۃ ربّ العزت तशरीफ़

www.dawateislami.net

लाएंगे, बा'दे नमाज़ अ़र्ज़ कर दीजिये कि **तजदीदे बैअ़त** के लिये ह़ाज़िर हुवा हूं।'' येह सुन कर उन को कुछ सुकून हुवा।

इतने में देखा कि उसी वक़्त ख़िलाफ़े मा'मूल **आ'ला ह़ज़रत** علیہ رحمۃ ربّ العزت बाहर तशरीफ़ लाए और साह़िब ज़ादे से फ़रमाया : ''**आप कैसे आए ?**'' येह सुन कर हमें बहुत तअ़ज्जुब हुवा, इस लिये कि आ़दते करीमा येह थी कि हर नौ वारिद से दरयाफ़्त फ़रमाते : ''**आप ने कैसे तक्लीफ़ फ़रमाई ?**'' बहर ह़ाल साह़िब ज़ादे ने ह़ज़रत के दरयाफ़्त करने पर बजुज़ रोने के जवाब न दिया। थोड़ी देर के बा'द हुज़ूर ने फिर फ़रमाया : ''**रोने से कोई नतीजा नहीं, मत़्लब कहिये !**'' इस पर उन्हों ने सारा वाक़िआ़ बयान किया। येह सुन कर इर्शाद फ़रमाया : ''मेरे पास किस लिये आए हैं ?'' येह सुन कर वोह साह़िबज़ादे फिर रोने लगे और जो तरकीब हम लोगों ने बताई थी उस के कहने की उन्हें जुरअत न हुई। इस के बा'द हुज़ूर येह फ़रमाते हुए तशरीफ़ ले गए कि ''**आप क़ियाम करें मुझे काम करना है।**'' हम ने नौ जवान को तसल्ली देते हुए कहा : ''आप डरें नहीं और नमाज़े ज़ोहर के वक़्त **तजदीदे बैअ़त** के लिये अ़र्ज़ कर दें।'' बा'द नमाज़े ज़ोहर **पीरे त़रीक़त रहबरे शरीअ़त आ'ला ह़ज़रत** علیہ رحمۃ ربّ العزت जब अपनी निशस्त गाह पर जल्वा गर हुए तो उस नौ जवान ने तजदीदे बैअ़त के लिये अ़र्ज़ की। आप رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ ने इर्शाद फ़रमाया : ''जब आप वहां बैअ़त हो चुके हैं फिर मुझ से क्यूं कहा जाता है ?'' अ़र्ज़ की : ''हुज़ूर ! मुझ से क़ुसूर हुवा है अपने **क़ुसूर की मुआ़फ़ी** चाहता हूं, लोगों के बहकाने में

www.dawateislami.net

आ गया था।" फ़रमाया : "**ख़ूब ग़ौर कर लो ! सोच लो ! समझ लो ! मुझे मुरीद करने का शौक़ नहीं है मगर येह कि लोग सिराते मुस्तक़ीम पर क़ाइम रहें, येह ठीक नहीं कि आज इस दरवाज़े पर खड़े हैं, कल उस दरवाज़े पर, यक दर गीर मोह़कम गीर।**" उन्हों ने हाथ जोड़ कर अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! अब ऐसा ही होगा ख़ुदा के लिये मेरी ख़त़ा मुआफ़ फ़रमा दीजिये।" येह सुन कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने उन्हें दाख़िले सिल्सिला फ़रमा लिया और वोह साह़िब ज़ादे ख़ुशी ख़ुशी वापस तशरीफ़ ले गए। (ह़याते आ'ला ह़ज़रत, जि. 3, स. 195)

जो मर्कज़ है शरीअ़त का मदार अहले त़रीक़त का
जो मह़वर है त़रीक़त का वोह क़ुत़्बुल औलिया तुम हो
यहां आ कर मिलें नहरें शरीअ़त और त़रीक़त की
है सीना मज्मउ़ल बह़रैन ऐसे रहनुमा तुम हो
तुम्हारी शान में जो कुछ कहूं इस से सिवा तुम हो
क़सीमे जामे इरफ़ां ऐ शहे अह़मद रज़ा तुम हो

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की आ'ला ह़ज़रत पर रह़मत हो और उन के स-दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(19) निगाहे वली की तासीर

इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, आ'ला ह़ज़रत علیہ رحمۃ ربِّ العزت सि. 1329 हि. में "**मद्रसतुल ह़दीस**" में ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना शाह मुह़म्मद वसी अह़मद सूरती علیہ رَحْمَةُ اللّٰهِ القوی के हां मुक़ीम

www.dawateislami.net

थे। सय्यिद फ़रज़न्द अ़ली साहि़ब आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ से मिलने आए और दस्त बोस हुए। सय्यिद साहि़ब की दाढ़ी कटी हुई थी। **आ'ला ह़ज़रत** علیہ رحمۃ ربّ العزت बहुत देर तक **गहरी नज़रों** से सय्यिद साहि़ब के चेहरे को देखते रहे। सय्यिद साहि़ब फ़रमाते हैं कि "आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की निगाहों ने मुझे पसीना पसीना कर दिया, ऐसा मा'लूम होता था कि एक सच्चे आ़शिक़े रसूल मुझे दाढ़ी रखने की **ख़ामोश हिदायत** फ़रमा रहे हैं। मैं ने सुब्ह़ को ह़ाज़िरे ख़िदमत हो कर अपने इस फ़े'ले शनीआ़ (बुरे फ़े'ल) से **तौबा** की। इस ह़िकायत के रावी कहते हैं कि "आज मैं अपनी आंखों से देखता हूं कि सय्यिद साहि़ब के चेहरे पर निहायत ख़ुशनुमा **दाढ़ी** मौजूद है।" (ह़याते आ'ला ह़ज़रत, जि. 3, स. 238)

निगाहे वली में वोह तासीर देखी
बदलती हज़ारों की तक़्दीर देखी

म-दनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दाढ़ी बढ़ाना तमाम **अम्बियाए किराम** عَلَیۡہِمُ السَّلَام बल्कि ख़ुद हमारे मीठे मीठे आक़ा **मदीने वाले मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की प्यारी और पाकीज़ा सुन्नत है। दाढ़ी बढ़ाने की हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बहुत **ताकीद** फ़रमाई है। सच्चे आ़शिक़ की येह शान है कि वोह अपने मह़बूब की हर हर अदा को अपनाने की कोशिश करता है। कभी भी अपने मह़बूब की ना पसन्दीदा चीज़ों के क़रीब नहीं जाता बस उस की येही ख़्वाहिश होती है किसी त़रह़ मेरा मह़बूब मुझ से राज़ी रहे। लेकिन येह सब बातें उसी वक़्त

www.dawateislami.net

दिलो दिमाग़ में रासिख़ होती हैं जब ऐसा माहोल मिले जिस में रह कर ख़ौफ़े ख़ुदा व इश्क़े मुस्तफ़ा عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दौलते उज़्मा नसीब हो। اَلْحَمْدُلِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ क़ुरआनो सुन्नत की ग़ैर सियासी आ़लमगीर तह़रीक **''दा'वते इस्लामी''** हमें ऐसा माहोल फ़राहम करती है जिस में रह कर **सुन्नतों पर अ़मल** करना बहुत आसान हो जाता है, बे अ़मल आ'माले सालिह़ा की त़रफ़ राग़िब हो जाते हैं। फ़ेशन के मतवाले सुन्नतों के दीवाने बन जाते हैं और गुनाहों की दलदल से निकल कर सुन्नतों के पुर बहार गुलशन में आ जाते हैं। चेहरे पर दाढ़ी शरीफ़ का नूर आ जाता है, सर पर इ़मामे शरीफ़ का ताज और जिस्म पर सुफ़ेद नूरानी लिबास अपनी ज़ियाएं बिखेरने लगता है। फिर इस रंग में रंगा हुवा इस्लामी भाई सुन्नतों की चलती फिरती तस्वीर नज़र आने लगता है।

उन का दीवाना इ़मामा और ज़ुल्फ़ो रीश में
वाह ! देखो तो ज़रा लगता है कैसा शानदार

अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से सच्ची वाबस्तगी अ़त़ा फ़रमाए और ता दमे आख़िर इसी माह़ोल में रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए !

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की आ'ला ह़ज़रत पर रह़मत हो और उन के स-दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

(20) इस्लाही मक्तूब

इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, पीरे त़रीक़त, रहबरे शरीअ़त, सरकारे आ'ला ह़ज़रत मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن का सीनए बे कीना प्यारे आक़ा **मदीने वाले मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उ़म्मत की ख़ैर ख़्वाही के अ़ज़ीम जज़्बे का ख़ज़ीना था । इसी मुक़द्दस जज़्बे के तह़्त अपनी सारी ज़िन्दगी मुसल्मानों की **इस्लाह़** की कोशिश फ़रमाते रहे । नेकी की दा'वत का अन्दाज़ ऐसा प्यारा होता कि लोग ख़ुद ब ख़ुद आ'माले सालिह़ा की त़रफ़ राग़िब होने लगते । आइये ! एक ऐसा ही **इस्लाही मक्तूब** पढ़ते हैं जिस में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपने मुसल्मान भाइयों को बड़े प्यारे अन्दाज़ में **नेकी की दा'वत** दी :

शबे बराअत क़रीब है, इस रात तमाम बन्दों के आ'माल ह़ज़रते इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ में पेश होते हैं । मौला عَزَّوَجَلَّ ब तुफ़ैले ह़ुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए़ यौमुन्नुशूर عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ السَّلَام मुसल्मानों के ज़ुनूब (गुनाह) मुआ़फ़ फ़रमाता है, मगर चन्द इन में वोह दो मुसल्मान जो बाहम दुन्यवी वजह से रन्जिश रखते हैं फ़रमाता है इन को रहने दो जब तक आपस में सुल्ह़ न कर लें । एक दूसरे के ह़ुक़ूक़ अदा कर दें या मुआ़फ़ करा लें कि बि इ़ज़्निही तआ़ला ह़ुक़ूक़ुल इ़बाद से सह़ाइफ़े आ'माल (या'नी आ'माल नामे) ख़ाली हो कर बारगाहे इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ में पेश हों । ह़ुक़ूक़े मौला तआ़ला के लिये तौ बए सादिक़ा काफ़ी है । اَلتَّائِبُ مِنَ الذَّنْبِ كَمَنْ لَّا ذَنْبَ لَهٗ (या'नी गुनाह से तौबा करने वाला

www.dawateislami.net

ऐसा है जैसे उस ने गुनाह किया ही नहीं ।) (इब्ने माजह, किताबुज़्ज़ोह्द, अल ह़दीस : 4250, जि. 4, स. 491, दारुल मा'रिफ़ह बैरूत) ऐसी ह़ालत में बि इज़्निही तआ़ला ज़रूर इस शब में उम्मीदे मग़्फ़िरते ताम्मह है ब शर्ते कि सिह़्ह़ते अ़क़ीदा । وَهُوَ الْغَفُوْرُالرَّحِيْم۔

येह सुन्नते मुसा-ल-ह़ते इख़्वान (या'नी भाइयों में सुल्ह़ करवाना) व मुआ़फ़िये ह़ुकूक़ بِحَمْدِہٖ تَعَالٰی यहां सालहाए दराज़ से जारी है । उम्मीद है कि आप भी वहां के मुसल्मानों में इज्रा कर के مَنْ سَنَّ فِیْ الْاِسْلَامِ سُنَّةً حَسَنَةً كَانَ لَهٗ اَجْرُهَا وَمِثْلُ اَجْرِمَنْ عَمِلَ بِهَا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَايَنْقُصُ مِنْ اُجُوْرِهِمْ شَيْئًا (या'नी जो इस्लाम में अच्छी राह निकाले उस के लिये इस का सवाब है और क़ियामत तक जो इस पर अ़मल करें उन सब का सवाब हमेशा उस के नामए आ'माल में लिखा जाए बग़ैर इस के कि उन के सवाबों में कुछ कमी आए ।) (अल मो'जमुल औसत़ लित़्-बरानी, अल ह़दीस : 8946, जि. 6, स. 331, दारो इब्ने ह़ज़्म) के मिस्दाक़ । और इस फ़क़ीर के लिये अ़फ़्वो आ़फ़िय्यते दारैन की दुआ़ फ़रमाएं । फ़क़ीर आप के लिये दुआ़ करता है और करेगा । اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ सब मुसल्मानों को समझा दिया जाए कि वहां न ख़ाली ज़बान देखी जाती है न निफ़ाक़ पसन्द है । सुल्ह़ व मुआ़फ़ी सब सच्चे दिल से हो । वस्सलाम

फ़क़ीर अह़मद रज़ा क़ादिरी अज़ बरेली

(फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल, स. 1382)

www.dawateislami.net

म-दनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुसल्मान अपने मुसल्मान भाई का **ख़ैर ख़्वाह** होता है। कामिल मुसल्मान वोही है जिस की ज़बान व हाथ से दूसरे मुसल्मान **महफ़ूज़** रहें। अगर कभी शैतान के बहकावे में आ कर ग़-लती हो जाए और किसी मुसल्मान भाई को हम से कोई तक्लीफ़ पहुंच जाए तो फ़ौरन अल्लाह तआ़ला से डर जाना चाहिये और अपने मुसल्मान भाई से सच्चे दिल से मुआ़फ़ी मांग लेनी चाहिये। इस काम में हरगिज़ हरगिज़ सुस्ती व शर्म नहीं करनी चाहिये कहीं ऐसा न हो कि कल बरोज़े क़ियामत ऐसी **शरमिन्दगी** का सामना करना पड़े कि सब मख़्लूक़ के सामने रुस्वाई हो। लिहाज़ा आ़जिज़ बन कर फ़ौरन मुआ़फ़ी मांग लेने ही में दीन व दुन्या की भलाई है। आज के इस पुर फ़ितन दौर में दा'वते इस्लामी का सुन्नतों भरा माहोल हमें येह म-दनी सोच देता है कि अपने मुसल्मान भाइयों का ह़स्बे मरातिब अदब व एह़तिराम करना चाहिये। दा'वते इस्लामी ने हमें येह सोच दी कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।"** अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त हमें **आ'ला ह़ज़रत** علیہ رحمۃ ربّ العزت के नक़्शे क़दम पर चलते हुए ख़ूब ख़ूब सुन्नतें आ़म करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए, हर दम सुन्नतों पर अ़मल पैरा होने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और हमारा ख़ातिमा बिलख़ैर फ़रमाए।

तब्लीग़ सुन्नतों की करता रहूं हमेशा
मरना भी सुन्नतों में हो सुन्नतों में जीना

www.dawateislami.net

दीदारे आ'ला ह़ज़रत की बदौलत दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो गया

दा'वते इस्लामी के आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में होने वाले दस रोज़ा सुन्नतों भरे **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** में शरीक एक इस्लामी भाई ने कुछ यूं तह़रीर दी कि एक रात मैं सोया तो मेरी क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी, اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं ने ख़्वाब में इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن का दीदार किया । मैं ने देखा कि आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ नमाज़ पढ़ा रहे हैं और आप के पीछे वजीह चेहरे वाले कुछ लोग नमाज़ अदा कर रहे हैं जिन के सरों पर **सब्ज़ सब्ज़ इमामे** और बदन पर सुन्नत के मुत़ाबिक़ **सफ़ेद लिबास** थे । फिर मेरी आंख खुल गई । जब मा'लूमात कीं तो पता चला कि सब्ज़ सब्ज़ इमामा **दा'वते इस्लामी** वाले सजाते हैं और इन के अमीर, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार** क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ हैं । फिर मुझे **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का रिसाला **''तज़्किरए इमाम अह़मद रज़ा''** पढ़ने का मौक़अ़ मिला । दिल तो पहले ही मुत्मइन था, **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की **आ'ला ह़ज़रत** علیہ رحمۃ ربّ العزت से मह़ब्बत देख कर मैं और भी मु-तअस्सिर हुवा और **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के हाथों बैअ़त हो कर **अ़त्त़ारी** बन गया । अब

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं दा'वते इस्लामी के इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में शरीक होने की सआदत पा रहा हूं और मैं **सब्ज़ सब्ज़ इमामा** सजाने और सुन्नत के मुताबिक़ एक मुठ्ठी **दाढ़ी शरीफ़** सजाने की भी निय्यत करता हूं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की आ'ला ह़ज़रत और अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और उन के स-दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आप भी म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप भी तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये। अपने शहर में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत और **राहे ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने वाले आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र कीजिये और शैख़े त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़ता कर्दा **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल कीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप को दोनों जहां की ढेरों भलाइयां नसीब होंगी।

मक़्बूल जहां भर में हो दा'वते इस्लामी
सदक़ा तुझे ऐ रब्बे ग़फ़्फ़ार मदीने का

सीधा रास्ता मिल गया

ह़ैदर आबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के एक इस्लामी भाई का बयान है कि सि. 1990 ई. की बात है, बद अ़क़्दगी ने हमारे ख़ानदान

में अपने पन्जे गाड़ रखे थे। मैं ख़ुद **तज़ब्ज़ुब** का शिकार था कि कौन सा गुरौह **सीधे रास्ते** पर है। एक रात मैं ने सख़्त परेशानी के आ़लम में येह दुआ़ की : "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे सह़ीह़ अ़क़ीदे अपनाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा।" इस के बा'द मैं सो गया। सर की आंखें तो क्या बन्द हुईं मेरे दिल की आंखें खुल गईं मुझे अपने शहद से मीठे मीठे आक़ा मक्की **म-दनी मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदार नसीब हो गया। क़रीब ही नूरानी चेहरे वाले **2 बुज़ुर्ग** भी मौजूद थे। उन में से एक की त़रफ़ इशारा कर के कुछ यूं इर्शाद फ़रमाया : "**येह अह़मद रज़ा हैं, इन के मस्लक को अपना लो।**" फिर दूसरी हस्ती के बारे में कुछ इस त़रह़ फ़रमाया : "**येह इल्यास क़ादिरी हैं, इन से मुरीद हो जाओ।**" जब मैं बेदार हुवा तो अपनी ख़ुश बख़्ती पर फूले न समाता था। اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उस दिन से मैं ने **आ'ला ह़ज़रत** علیہ رحمۃ ربّ العزت का दामन मज़्बूती से थाम लिया और **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से बैअ़त हो कर अ़त्तारी भी बन गया। दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल की ब-र-कत से आज मेरा पूरा ख़ानदान सुन्नी हो चुका है और हमारे घर में इस्लामी बहनों का **मद्रसतुल मदीना** (बालिग़ात) भी लगता है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अमीरे अहले सुन्नत से बैअत होने का त़रीक़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो और बहनो ! अगर आप मुरीद बनना चाहते हैं तो अपना और जिन को **मुरीद या त़ालिब** बनवाना चाहते हैं उन का नाम नीचे तरतीब वार बमअ़ वल्दिय्यत व उ़म्र

www.dawateislami.net

लिख कर ''मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या म-दनी मर्कज़ **दा'वते इस्लामी** शाही मस्जिद शाहे आ़लम दरवाज़ा के सामने अह़मद आबाद गुजरात'' के पते पर रवाना फ़रमा दें तो اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ उन्हें भी सिल्सिलए **क़ादिरिय्या र-ज़विय्या अ़त्तारिय्या** में दाख़िल कर लिया जाएगा।

(पता अंग्रेज़ी के केपीटल ह़ुरूफ़ में लिखें)

E.Mail : Attar@dawateislami.net

(1) नाम व पता बॉल पेन से और बिल्कुल साफ़ लिखें, ग़ैर मशहूर नाम या अल्फ़ाज़ पर लाज़िमन ए'राब लगाएं। अगर तमाम नामों के लिये एक ही पता काफ़ी हो तो दूसरा पता लिखने की ह़ाजत नहीं। (2) एड्रेस में मह़रम या सरपरस्त का नाम ज़रूर लिखें। (3) अलग अलग मक्तूबात मंगवाने के लिये जवाबी लिफ़ाफ़े साथ ज़रूर इरसाल फ़रमाएं।

नम्बर शुमार	नाम	मर्द/ औ़रत	बिन/ बिन्ते	बाप का नाम	उ़म्र	मुकम्मल एड्रेस

म-दनी मश्वरा : इस फ़ॉर्म को मह़फ़ूज़ कर लें और इस की मज़ीद कॉपियां करवा लें।

www.dawateislami.net